प्रातः क्लास 30-12-68 ओमशान्ति पिताश्री शिव बाबा याद है?

ओमशान्ति। अभीआती है शिव बाबा की जयन्ति। शिव बाबा की जयन्ति पर कैसे समझाना चाहिए। जैसे तुमको बाप ने समझाया है वैसे ही तुमको फिर औरों को भी समझाना है। वैसे तो नहीं बाबा जैसे तुमको पढ़ाया है वैसे बाबा को ही सभी को पढ़ाना है। शिव बाबा ने तुमको पढ़ाया है। जानते हो इस शरीर द्वारा पढ़ाया है। बरोबर हम शिव बाबा की 33वीं जयन्ति मनाते हैं। यह शरीर तो 33वां नहीं है ना। इनकी जयन्ति नहीं मनाते हैं। तुमको मनुष्य कहते हैं दादा को भगवान क्यों कहते हो। परन्तु तुम तो शिवजयन्ति कि 33वीं मनाते हो। इनकी तो मना नहीं सकेंगे। हम किसकी जयन्ति मनाते हैं यह भी मनुष्यों को पूछना चाहिए ना। परन्तु मायावी बुधि होने कारण कुछ भीसमझते ही नहीं। यह पूछते भी नहीं हैं कि 33वीं जयन्ति तुम किसकी मनाते हो। तो पायन्टस समझानी पड़े। बाप खुद ही आकर बच्चों को समझाते हैं। तो तुमको भी समझाना पड़े। उनको तो पूछने का अकल ही नही हैं। बुधि में ही नहीं आता है। कौन है जिसकी 33वां जयन्तिमनाते हैं। हम नाम भी शिव का लेते हैं। वह तो है ही निराकार। उनको शिव कहा जाता है। वह लोग तो कहते हैं शिव तो जन्म मरण से रहित है। उनकी फिर जयन्ति कैसी होगा। यह तो तुम जानते हो कैसे नम्बरवार मनाते आते हैं। मनाते ही रहेंगे। तो उन्हों को समझाना पड़े बाप आकर इस तन का आधार लेते हैं। मुख तो जरूर चाहिए। इसलिये गऊमुख की ही महिमा है। यह राज जरा पेचीला है। शिव बाबा की आक्युपेशन समझाने की बात है। हमारा बेहद का बाप आया हुआ है। उनसे ही हमको बेहद का वरसा मिलता है। बरोबर भारत को बेहद का वरसा था। और किसको तो होता ही नहीं। भारत को ही सच्च खण्ड कहा जाता है। और बाप को भी सत्य कहा जाता है। यह तो सब बातें समझानी पड़ती है फिर कोई को जल्दी समझ में नहीं आता है। कोई तो झट समझ जाते हैं। यह योग और एडयुकेशन (ज्ञान), दोनो तरकनी है। इसमें भी योग जरूरती तरकना है। नालेज तो बुधि में रहती ही है। बाकी याद ही घड़ी2 भूलते हैं। नालेज तो तुम्हारी बुधि में है। हम 84 जन्म लेते हैं। जिनको यह नालेज है वही समझते हैं। बुधि से भी समझते हैं जो पहले2 नम्बर में आते हैं वही 84 जन्म लेंगे। पहले पहले ऊंच ते ऊंच ल0ना0 को गिनेंगे। नर से ना0 बनने की कथा भी नामी ग्रामी है। पूर्णमासी पर बहुत जगह सत्य ना0 की कथा चलती है। अभी तुम जानते हो हम सच्च2 बाबा द्वारानर से ना0 बनने की पढ़ाई पढ़ते हैं। यह है पावन पढ़ाई। और है भी सभी पढ़ाईयों से बिल्कुल सहज। 84 जन्मों के चक्र को जानना है। और यह पढ़ाई सभी के लिये एक ही है। बूढ़े बच्चे जवान जो भी हो सभी के लिये है, एक ही पढ़ाई। छोटे बच्चों का भी हक है। अगर मां बापउनको थोड़ा2 सिखलाते रहे तो टाईम तो बहुत पड़ा है। बच्चों को यह भी सिखलाया जाता है शिव बाबा को याद करो। आत्माओं और शरीर दोनों का बाप अलग2 है। आत्मा बच्चा भी निराकारी है तो बाप भी निराकारी है। यह भी तुम बच्चों की बुधि में है वह निराकार शिव बाबा हमारा बाप है। कितना छोटा है। यह अच्छी रीत याद रखना है। भूलना न चाहिए। हम आत्मा भी बिन्दी असल छोटी हैं। ऐसे नहीं ऊपर में जावेंगे तो बड़ी दिखाई पड़ेंगे। नीचे छोटी हो जावेंगी। नहीं। भृकुटि के बीच में चमकता है अजब सितारा। तो वह बिन्दी असल है। ऊपर में जावेंगे तो तुमको जैसे देखने में भी आवेंगे। बिन्दी है ना। बिन्दी क्या देखने में आवेंगे। इन बातों पर अच्छी रीत बच्चों को विचार करना है। हम आत्माएं पार आई हैं शरीर धारण कर पार्ट बजाने। छोटे शरीर का बड़े शरीर में एक ही आत्मा है। आत्मा बढ़ती घटती नहीं है। आत्मायें पहले छोटे फिर बड़े होते हैं। अभी जैसे तुमने समझा है वैसे फिर औरों को भी समझाना है। यह तो जरूर है नम्बरवार जो जितना पढ़ा है उतना पढ़ाते भी हैं। सभी को टीचर भी जरूर बनना है। सिखलाने वाले। बाप में तो नालेज है वह इतनी छोटी सी परम आत्मा है। सदैव परमधाम में रहते हैं। यहां एक ही बार जन्म पर आते हैं। बाप को पुकारते भी तब हैं जब बहुत दुःखी होते हैं तब कहते हैं आकर हमको सुखी बनाओ। बच्चे अभी समझते हैं हम पुकारते रहते हैं बाबा आकर हमको पतित दुनिया से नई पावन दुनिया

में ले जाओ। अथवा वहां जाने का रास्ता बताओ। वह भी जब खुद आवे तब तो रास्ता बतादे। वह आवें तब जब दुनिया को बदलना होगा। यह बड़ी सहज बात है। नोट करना है। बाबा ने आज यह समझाया है। हम भी ऐसे समझाते थे। ऐसी प्रेक्टीस करते2 मुरली खुल जावेगी। औरों का कल्याण करेंगे तब तो नई दुनिया में ऊंच पद पावेंगे। वह पढ़ाई तो है यहां के लिये। यह है भविष्य नई दुनिया के लिये। वहां तो सदैव सुख ही सुख है। वहां 5विकार तंग करने वाले होते ही नहीं। वहां रावण राज्य अर्थात पराई राज्य में है। तुम्हीं पहले अपने राज्य में थे। तुम कहेंगे नई दुनिया में हम भारतवासी ही थे। और कोई नहीं थे। भारत को ही नई दुनिया फिर भारत को ही पुरानी दुनिया कहा जाता है। गायन भी है नई दुनिया में भारत। ऐसे नहीं कहेंगे नई दुनिया में ईस्लामी बोधी। नहीं। अभी तुम्हारी बुधि में है बाप आकर हम बच्चों को जगाते हैं। ड्रामा में पार्ट ही उनका ऐसा है। भारत को ही आकर स्वर्ग बनाते हैं। भारत ही पहला देश है। भारत पहले देश को ही स्वर्ग, हैविन कहते हैं। भारत ही की आयु भी लिमिटेड है। लाखों वर्ष कहना यह तो अनलिमिटेड हो जाता है। लाखों वर्ष की बात कोई स्मृति में आ नहीं सकता। यह तो सब समझते हैं नया भारत था। अभी पुराना भारत कहेंगे। भारत ही नई दुनिया होगी। तुम जानते हो हम अभी नई दुनिया के मालिक बन रहे हैं। बाप ने राय बताई है मुझे याद करो तो तुम्हारी नई प्युर आत्मा बन जावेगी। ब तत्व भी सतोप्रधान होती है ना तो जो उनसे शरीर भी ऐसा सतो0 होता है। तुमको राज्य मिलता ही है सुख के लिये। यह भी ड्रामा अनादि बना हुआ है। नई दुनिया में सुख और शान्ति है। वहां कोई भी तुफान आदि नहीं होते। बेहद की शान्ति में भी शांति हो जाती है। यहां है अशान्ति। तो सभी अशान्त है। सतयुग में सभी शान्त होते हैं। वन्डरफुल बातें हैं ना। यह अनादि बना बनाया खेल है। यह है बेहद की बात। वह हद के बैरीस्टरी ईंजीनियरींग आदि पढ़ते हैं। अभी तुम्हारी बुधि में बेहद की नालेज है। एक ही बार बाप आकर ड्रामा का राज समझाते हैं। आगे तुम यह नाम भी नहीं सुना था कि बेहद का ड्रामा कैसे चलता है। अभी समझते हो सतयुग त्रेता था जरूर वह पास्ट हो गया है। द्वापर भी पास्ट हो गया। अभी कलियुग का अन्त है। यह तो सभी की बुधि में है ना। सतयुग पास्ट हो गया। उसमें भी इनका राज्य था। त्रेता में राम राज्य था। पीछे फिर और2 धर्म आये हैं। पहले2 स्वर्ग में ल0ना0 का राज्य था। चित्र भी है त्रेता में राम राज्य था। अभी त्रेता ही नहीं है तो रामराज्य फिर कहां से आवेगा। अभी तो अनेक राज्य हैं। त्रेता के बाद अनेक राज्य होते हैं। यह तो सभी जानते हो कौन कौन कब आये हैं। इस्लामी बोधी क्रिश्चन सभी धर्मों का पूरा मालूम है। 2500वर्ष है। उनका हिसाब ——है ना। मिलाकर 2500 वर्ष है उनमें 250वर्ष उनको 1250वर्ष इनको(रामचन्द्र को) 2000वर्ष उनको ···· हिसाब है ना। मिलाकर 2500वर्ष आधा कल्प की बात हुई। ऐसे तो नहीं सृष्टि की आयु 2500वर्ष है। नहीं। अच्छा फिर और कौन था। विचार किया जाता है। इन्हों के आगे बरोबरदेवी देवतायें थे। वह भी मनुष्य थे ना परन्तु दैवीगुण वाले थे। सूर्यवंशी चन्द्रवंशी 2500वर्ष में। बाकी आधा में वह सभी थे। इसी जाती का तो कोई हिसाब निकाल न सके। फल पौना आधा चौथा। चार हिस्से हैं। कायदे मिरे टूकड़ा2 करेंगे ना। आधा में तो यह है। कहते भी हैं सतयुग में सूर्यवंशी राज्य। त्रेता में चन्द्रवंशी राज्य। तुम सिध कर बताते हो। तो जरूर सभी से बड़ी आयु इनकी होगी ना जो पहले2 सतयुग में आते हैं। सेकण्ड नम्बर में त्रेता वाले होंगे। टाईम ही 5000वर्ष का है। वह लोग 84 लाख योनियां कह देते हैं तो कल्प की आयु भी लाखों वर्ष कह दिया है। तीन मुख्य धर्मों का तो टाईम निकला। बाकी सूर्यवंशी चन्द्रवंशी दो का लाखों वर्ष कैसे हो सकता है। कोई माने भी नहीं। इतनी बड़ी दुनिया हो भी न सके। जानवर आदि सभी एड कर दिया है। तो 84लाख योनियां कह देते हैं। तो बाप बैठ समझाते हैं वह सभी है अज्ञान। और यह है ज्ञान। अज्ञान कहां से आया यह किसको भी पता नहीं। ज्ञान का सागर तो एक ही बाप है। वही ज्ञान देते हैं मुख से। कहते हैं गऊ मुख। इस गऊमाता से तुम सभी के एडाप्ट करते हैं। यह थोड़ी2 बातें समझाने में तो बड़ी सहज है। एक रोज समझाकर और फिर छोड़ देंगे तो बुधि फिर और2 बातों में लग जावेगी। स्कूल में

30-12-82

एक ही दिन नहीं पढ़ा जाता रेगुलर पढ़ा जाता है ना। नालेज एक दिन मे समझ जा सकते हैं। वेहद का बाप हमको पढ़ाते हैं। तो जरूर वेहद की पढ़ाई होगी। वेहद का राज्य देते हैं। भारत मे वेहद का राज्य ना। यह ल0ना0 वेहद का राज्य करते थे। किसको यह बातें स्वप्नन मे नहीं हैं। जो पूछे कि इन्होंने राज्य कैसे लिया। इन्हों मे प्युरिटी जास्ती थी। योगी है ना। इसलिये आयु भी बड़ी होती है। हम ही योगी थे फिर हम ही 84 जन्म ले भोगी बने हैं। मनुष्य नहीं जानते यह भी जरूर पुर्न जन्म मे आये होंगे। इन्हों को भगवान भगवती नहीं कहा जाता। इनसे पहले तो कोई नहीं जिसने 8 4 जन्म लिया हो। इनसे आगे 84जन्मों वाला कोई होता ही नहीं। पहले2 जो सतयुग मे राज्य करते हैं। वही 84 जन्म लेते हैं। फिर नम्बरवार नीचे आते हैं। हम आत्मा सो देवता बनेंगे फिर नम्बरवार पीछे आते हैं हम आत्मा सो देवता क्षत्री वैश्य शुद्र बनेंगे। आत्मा की ही डीग्री कम होगी। गाया भी जाता है पूज्य सो पुजारी। सतोप्रधान से तमोप्रधान बनते हो। ऐसे पुनर्जन्म लेते2नीचे चले जावेंगे। यह कितना सहज है परन्तु माया ऐसीहै जो यह बातें भूला देती है। यह सभी पायन्ट इकट्ठी कर किताब बनानी चाहिए फिर इसको अध्ययन करना चाहिए। यह भी जानते हो विनाश होगा तो फिर यह किताब आदि कुछ भी नहीं रहेंगी। यह टेम्परारी है। बाप ने कोई गीता नहीं सुनाई थी। बाप जैसे अब समझा रहे हैं ऐसे समझाया था। यह वेद शास्त्र आदि भी बाद मे बनते हैं। यह सभी होललाट जो है विनाश होगा तो यह सभी जल जावेंगे। सतयुग त्रेता मे कोई पुस्तक होता ही नहीं। फिर भक्ति मार्ग मे बनते हैं। कितनी चीजें बनती हैं। परन्तु वेसमझ से कुछ भी बता नहीं सकते। बाप समझाते हैं यह हर वर्ष बनाते हैं और जलाते हैं। जरूर यह बड़ा दुश्मन है। परन्तु कैसा दुश्मन है यह कोई भी नहीं जानते। वह समझते हैं सीता चुराकर ले गया। इसलिये शायद दुश्मन है। राम की सीता को चुराकर ले जावे तो यह तो बड़ा डाकू हुआ ना। कब चोरी की। त्रेता के अन्त मे कहें वा त्रेता मे कहें। इन बातों पर भी विचार किया जाता है कि कब चोरी होनी चाहिए। कौन सी राम की सीता चोरी हुई। राम सीता की भी राजधानी चली है ना। क्या एक ही राम सीता चले आते हैं क्या? यह तो शास्त्रों मे जैसे किस्क कहानी बनाई है। इतने लगती नहीं हैं। विचार किया जाता है कौन सी सीता। 1.2 नम्बर होते हैं ना राम-सीता। तो कौन सी सीता को चुराया? जरूर पिछाड़ी का होगा जो फिर रावण हमेशा लिये मर जावे फिर कब सीता को ले ही न जावे। यह बातें भी शोभे तब जब कोई बैठ रामायण सुनावे तो सयाणा समझु बैठ उनसे पूछे 1. बिल्कुल सत्यता से पूछे। यह जो कहते हैं राम की सीता चुराई गई। अब राम के राज्य मे सारा समय एक ही राम का राज्य तो नहीं होगा ना। जरूर डिनायस्टी होगी। तो कौन सी नम्बर की सीता चुराई गई। जरूर पिछाड़ी की समझेंगे तब फिर रावण राज्य पूरा होता है और फिर सतयुग शुरू होता है। परन्तु त्रेता के बाद मे द्वापर आता है। तो यह बातें भी ठहरती नहीं। तो कहेंगे यह सभी शास्त्र झूठे हैं। शास्त्रों को कब कोई झूठा कहे तो कितना बिगड़ते हैं। तिथ तारीख कुछ भी नहीं। उन शास्त्रों का मान कितना है। है तो कुछ भी नहीं। बाप समझाते हैं वेद शास्त्र सभी गपोड़े हैं। उनसे कोई मेरे साथ मिल नहीं सकता। बाप समझाते हैं भक्ति मार्ग मे कितना धक्का खाते2 दुःखी हो गये हैं। जब अति दुःखी हो जाते हैं तब रोड़ियां मारते हो। बाबा इस दुःख से छुड़ाओ। रावण तो कोई चीज नहीं है ना। अगर है तो अपने राजा को फिर हर वर्ष मारते क्यों हो। रावण की जरूर स्त्री भी होगी। मदोद्री दिखाते हैं। मदोद्री का बूत बनाकर जलावे ऐसा कब देखा नहीं है। तो बाप बैठ समझाते हैं यह है ही झूठी माया... शास्त्र भी सभी झूठे हैं। खण्ड भी झूठा। खण्ड मे रहने वाले सभी मनुष्य भी झूठे बन जाते हैं। अभी तुम झूठे मनुष्य से सच्च देवता बनने आये हो। फर्क तो बहुत है ना। वहां तुम सदैव सच्च बोलेंगे। वह है ही सच्च खण्ड। यह है झूठ खण्ड। तो सदैव झूठ बोलते हैं। नम्बरवन झूठ ईश्वर सर्वव्यापी कहते हैं। अभी तुम्हारी बुधि मे सारी बात आई है। सर्व शास्त्रमई गीता मे भी झूठ लिख दिया है कि मैं सर्वव्यापी हूं। बाप कहते हैं मैंने तो कब ऐसा कहा नहीं कि मैं सर्वव्यापी हूं। सर्वव्यापी तो मेरे बच्चे हैं। सामने सम्मुख बैठे हैं। बच्चों को बाप बैठ समझाते हैं तुम्हारा घर वह है। बाप की

30.12.68

4

कितनी महिमा है। ज्ञान का सागर है वही सर्व की सद्गति करते हैं। वही तुमको ज्ञान देते हैं। और कोई में ज्ञान है नहीं। नई दुनिया को स्वर्ग कहा जाता है। बाप आते ही हैं नई दुनिया की स्थापना करने। अभी शिव जयन्ति आती है बच्चों को विचार करना है ऐसी कौन सी बात बतावें जो उन्हों को समझ में आवे। तुम प्रदर्शनी म्युजियम आदि में बहुत समझाती हो। लिखते हो बाबा 8-10, 15-20 आते हैं, कोर्स लेते हैं। आगे चलकर और भी एड होते जावेंगे। कट भी हो जावेंगे। तुम्हारे पास जो ढेर आवेंगे ऐसे नहीं पढ़ते रहेंगे सभी। माया बुधि का योग तोड़ एकदम अनपढ़ बना देगी। भागन्ति हो जावेंगे। तुम खुद जानते हो ब्राह्मणियां जानती हैं। आते तो बहुत ही हैं कोर्स लेने फिर भागन्ति हो जाते हैं। कोओं में कोई ठहरते हैं। कोई विरला जानेंगे। मैं जो हूं जैसा हूं विरला ही कोई जाने। 12-15 वर्ष हुआ पढ़ाते रहते हैं। कोई तो पीछे आने से भी इतना होशियार हो जाते हैं तो पढ़ाने वाले से भी तीखे जाते हैं। झट पढ़ाने लग पड़ते हैं। एक हफ्ता में तुम बहुत नाले उठा सकते हो। बाप को जानना है और 84 के चक्र को जानना है। और दैवीगुण भी धारण करनी है। बड़ी बात तो है नहीं। फिर भी देखा जाता है बहुत मेहनत है। तमोप्रधान से सतोप्रधान इस एक ही जन्म में बनना है। इसमें मेहनत लगती है। इतना सिर्फ बाप को ही याद करो और कोई भी याद न आये यह हो नहीं सकता। माया बहुत विघ्न डालती है। इतने वर्ष हुये हैं अभी तक सतोप्रधान नहीं बने हैं। सात दिन की भिती दी जाती है। नटशेल में तो समझ जाये। बाकी यादकी यात्रा में बहुत मेहनत करनी पड़ती है। घड़ी2 भूल जाते हैं। याद में सारा समय रह तुम भोजन पाओ मुश्किल है। बाबा पूछते नहीं हैं। तुम अपने ग्रेड को समझ सकते हो। बाबा खुद अपना अनुभव सुनाते हैं। अनेक प्रकार की युक्तियां रचता हूं। बाप को याद करने कीपरन्तु फिर भी याद ठहरती नहीं है। दो चार गिटी याद में खाये फिर भी भूल जाता हूं। फिर याद में बैठता हूं। एक दो मिनटयाद ठहरती फिर खिसक जाती है। अनुभव है ना। समझते हैं यह तो सभी स्टुडेन्ट को होगा। माया और तरफ ले जाती है। जैसे और बातों में माया गिराये देती है। इसमें भी माया गिराती है। बाप समझाते हैं अभी हर एक अपने से पूछे। नालेज भी भूल जाते हैं। शोक ही टूट जाता है। 10-20 वर्ष पुरु0 करते2 फिर टूट पड़ते हैं। माया की बहुत कड़ी गोली लग जाती है। एकदम गिर पड़ते हैं। जितना बाप सर्व-शक्तिवान है उतना ही 5विकार रूपी रावण भी जबरदस्त है। हेर पड़ी हुई है ना। इस पर सिन्धी में पहाका है देते हैं ना। हेर पड़ी हुई है सर्वव्यापी की तो कितना भी समझाओ समझते ही नहीं। भल टांग भी टूट जाये। तो भी हेर न उतरे। इसमें बहुत मेहनत करनी पड़ती है। पद भी बहुत भारी मिलता है। बाबा भी लिखते हैं ना तुम 21 जन्मों के लिये पदमापदमभाग्यशाली बनते हो। कितना सुख मिलता है। भगवान को आना पड़ता है फिर सतोप्रधान बनाने। फर एवर सतोप्रधान जो हैं वही पढ़ा सकते हैं। सिवाय बाप के और तो कोई फर एवर सतोप्रधान हो न सके। चक्र में तो सभी में आना ही है। नहीं तो 84 जन्म कौन लेंगे। तमो-प्रधान से फिर सतोप्रधान जरूर बनना है। बाप ने समझाया है अपने को आत्मा समझ बाप को याद करो तो तुम्हारी बैटरी भर जावेगी। घड़ी2 माया डिसकनेक्ट कर देती है। पता भी नहीं पड़ता है। सभी आत्माओं की बैटरी इस समय भरती है। यह तुम कल्प कल्प मेहनत करते हो नम्बरवार पुरुषार्थ अनुसार सभी की बैटरी भरती है। नम्बरवार मोचरे अनुसार भी। मानी मिलती है तो मोचरा भी। मेनर्स इसमें बहुत अच्छी चाहिए। वह होगी याद की यात्रा से। पढ़ाई से पैसे मिलेंगे। दैवीगुण भी चाहिए तब तो पैसा भी शोभेगा। तुम मेहनत बहुत करते हो परन्तु माया खा जाती है। लिखते हैं बड़ा ही अच्छा चलता था अचानक ही गुम हो गया। आता ही नहीं है। घायल हो जाते हैं। फिर तुम बच्चों को तो खातरी है स्थापना तो हो ही जानी है। माया दुश्मन भी कम नहीं है। फिर भी जानते हो कल्प2 हम जीत जरूर पाते हैं। हार और जीत का तो खेल है। अच्छा मीठे2 रूहानी बच्चों प्रति रूहानी बाप व दादा का याद प्यार गुडमार्निंग और नमस्ते।